

سُورَةُ التَّوْبَةِ

Surah 9 — At-Tawba (The Repentance) • Medinan • 129 Ayahs • Translation: Hindi

1

بَرَاءَةٌ مِّنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ إِلَى الَّذِينَ عَاهَدْتُم مِّنَ الْمُشْرِكِينَ

(ऐ मुसलमानों) जिन मुशरिकों से तुम लोगों ने सुलह का एहद किया था अब खुदा और उसके रसूल की तरफ से उनसे (एक दम) बेज़ारी है

2

فَسِيحُوا فِي الْأَرْضِ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَاعْلَمُوا أَنكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِي اللَّهِ وَأَنَّ اللَّهَ مُخْزِي الْكَافِرِينَ

तो (ऐ मुशरिकों) बस तुम चार महीने (ज़ीकादा, ज़िल हिज्जा, मुहर्रम रजब) तो (चैन से बेखतर) रूए ज़मीन में सैरो सियाहत (घूम फिर) कर लो और ये समझते रहे कि तुम (किसी तरह) खुदा को आजिज़ नहीं कर सकते और ये भी कि खुदा काफ़ि़रों को ज़रूर रूसवा करके रहेगा

3

وَأَذِّنْ مِّنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ إِلَى النَّاسِ يَوْمَ الْحَجِّ الْأَكْبَرِ أَنَّ اللَّهَ بَرِيءٌ مِّنَ الْمُشْرِكِينَ وَرَسُولُهُ فَإِنْ تُبْتُمْ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَإِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَأَعْلَمُوا أَنكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِي اللَّهِ وَبَشِّرِ الَّذِينَ كَفَرُوا بِعَذَابٍ أَلِيمٍ

और खुदा और उसके रसूल की तरफ से हज अकबर के दिन (तुम) लोगों को मुनादी की जाती है कि खुदा और उसका रसूल मुशरिकों से बेज़ार (और अलग) है तो (मुशरिकों) अगर तुम लोगों ने (अब भी) तौबा की तो तुम्हारे हक़ में यही बेहतर है और अगर तुम लोगों ने (इससे भी) मुंह मोड़ा तो समझ लो कि तुम लोग खुदा को हरगिज़ आजिज़ नहीं कर सकते और जिन लोगों ने कुफ़्र इस्तेयार किया उनको दर्दनाक अज़ाब की खुश ख़बरी दे दो

4

إِلَّا الَّذِينَ عَاهَدْتُمْ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ثُمَّ لَمْ يَنْقُصُوكُمْ شَيْئًا ۖ وَلَمْ يُظَاهِرُوا ۚ عَلَيْكُمْ
أَحَدًا ۚ فَأَتِمُّوا ۚ إِلَيْهِمْ عَهْدَهُمْ إِلَىٰ مُدَّتِهِمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ

मगर (हाँ) जिन मुशरिकों से तुमने एहदो पैमान किया था फिर उन लोगों ने भी कभी कुछ तुमसे (वफ़ा एहद में) कमी नहीं की और न तुम्हारे मुकाबले में किसी की मदद की हो तो उनके एहद व पैमान को जितनी मुद्दत के वास्ते मुक़रर किया है पूरा कर दो खुदा परहेज़गारों को यकीनन दोस्त रखता है

5

فَإِذَا أَنْسَلَخَ الْأَشْهُرَ الْحُرُمَ فَاقْتُلُوا ۚ الْمُشْرِكِينَ حَيْثُ وَجَدْتُمُوهُمْ وَخُذُوهُمْ
وَأَحْصِرُوهُمْ وَأَقْعُدُوا ۚ لَهُمْ كُلٌّ مَرْصِدٍ ۚ فَإِنْ تَابُوا ۚ وَأَقَامُوا ۚ الصَّلَاةَ
وَأَتَوْا ۚ الزَّكَاةَ فَخَلُّوا ۚ سَبِيلَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ ۚ رَحِيمٌ ۚ

फिर जब हुरमत के चार महीने गुज़र जाएँ तो मुशरिकों को जहाँ पाओ (बे ताम्मुल) कत्ल करो और उनको गिरफ्तार कर लो और उनको कैद करो और हर घात की जगह में उनकी ताक में बैटो फिर अगर वह लोग (अब भी शिर्क से) बाज़ आएँ और नमाज़ पढ़ने लगेँ और ज़कात दे तो उनकी राह छोड़ दो (उनसे ताअरूज़ न करो) बेशक खुदा बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है

6

وَإِنْ أَحَدٌ ۚ مِنَ الْمُشْرِكِينَ اسْتَجَارَكَ فَأَجِرْهُ حَتَّىٰ يَسْمَعَ كَلِمَ اللَّهِ ثُمَّ أَبْلِغْهُ
مَأْمَنَهُ ۚ ۚ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ ۚ لَا يَعْلَمُونَ

और (ऐ रसूल) अगर मुशरिकीन में से कोई तुमसे पनाह मागें तो उसको पनाह दो यहाँ तक कि वह खुदा का कलाम सुन ले फिर उसे उसकी अमन की जगह वापस पहुँचा दो ये इस वजह से कि ये लोग नादान हैं

7

كَيْفَ يَكُونُ لِلْمُشْرِكِينَ عَهْدٌ عِنْدَ اللَّهِ وَعِنْدَ رَسُولِهِ ۚ إِلَّا الَّذِينَ عَاهَدْتُمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ
الْحَرَامِ ۚ فَمَا اسْتَقِيمُوا ۚ لَكُمْ فَاسْتَقِيمُوا ۚ لَهُمْ ۚ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ

(जब) मुशरिकीन ने खुद एहद शिकनी (तोड़ा) की तो उन का कोई एहदो पैमान खुदा के नज़दीक और उसके रसूल के नज़दीक क्योंकर (क्रायम) रह सकता है मगर जिन लोगों से तुमने खानाए काबा के पास मुआहेदा किया था तो वह लोग (अपनी एहदो पैमान) तुमसे क़ायम रखना चाहें तो तुम भी उन से (अपना एहद) क़ायम रखो बेशक खुदा (बद एहदी से) परहेज़ करने वालों को दोस्त रखता है

8

كَيْفَ وَإِنْ يَظْهَرُوا ۚ عَلَيْكُمْ لَا يَرْقُبُوا ۚ فِيكُمْ إِلَّا ۚ وَلَا ذِمَّةً ۚ ۚ يَرْضَوْنَكُمْ بِأَفْوَاهِهِمْ
وَتَأْبَىٰ قُلُوبُهُمْ وَأَكْثَرُهُمْ فَسِقُونَ

(उनका एहद) क्योंकि (रह सकता है) जब (उनकी ये हालत है) कि अगर तुम पर ग़लबा पा जाए तो तुम्हारे में न तो रिश्ते नाते ही का लिहाज़ करेंगे और न अपने क़ौल व क़रार का ये लोग तुम्हें अपनी ज़बानी (जमा खर्च में) खुश कर देते हैं हालाँकि उनके दिल नहीं मानते और उनमें के बहुतेरे तो बदचलन हैं

9

أَشْتَرُوا ۚ بِآيَةِ اللَّهِ ثَمَنًا ۚ قَلِيلًا ۚ فَصَدُّوا ۚ عَنْ سَبِيلِهِ ۚ ۚ إِنَّهُمْ سَاءَ مَا كَانُوا
يَعْمَلُونَ

और उन लोगों ने खुदा की आयतों के बदले थोड़ी सी कीमत (दुनियावी फायदे) हासिल करके (लोगों को) उसकी राह से रोक दिया बेशक ये लोग जो कुछ करते हैं ये बहुत ही बुरा है

10

لَا يَرْقُبُونَ فِي مُؤْمِنٍ إِلَّا ۚ وَلَا ذِمَّةً ۚ ۚ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُعْتَدُونَ

ये लोग किसी मोमिन के बारे में न तो रिश्ता नाता ही कर लिहाज़ करते हैं और न क़ौल का क़रार का और (वाकई) यही लोग ज्यादाती करते हैं

11

فَإِنْ تَابُوا ۚ وَأَقَامُوا ۚ الصَّلَاةَ ۚ وَءَاتَوْا ۚ الزَّكَاةَ ۚ فَإِخْوَانُكُمْ فِي الدِّينِ ۚ وَنُفَصِّلُ
الْءَايَاتِ لِقَوْمٍ ۚ يَعْلَمُونَ

तो अगर (अभी मुशरिक से) तौबा करें और नमाज़ पढ़ने लगे और ज़कात दें तो तुम्हारे दीनी भाई हैं और हम अपनी आयतों को वाक़िफ़कार लोगों के वास्ते तफ़सीलन बयान करते हैं

12

وَإِنْ نَكَثُوا ۚ أَيْمَانَهُمْ مِّنْ ۚ بَعْدِ عَهْدِهِمْ ۚ وَطَعَنُوا ۚ فِي دِينِكُمْ ۚ فَقَتِلُوا ۚ ۚ أُمَّةَ الْكُفْرِ ۚ
إِنَّهُمْ لَا أَيْمَانَ لَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَنْتَهُونَ

और अगर ये लोग एहद कर चुकने के बाद अपनी क़समें तोड़ डालें और तुम्हारे दीन में तुमको ताना दें तो तुम कुफ़्र के सरवर आवारा लोगों से ख़ूब लड़ाई करो उनकी क़समें का हरगिज़ कोई एतबार नहीं ताकि ये लोग (अपनी शरारत से) बाज़ आएँ

أَلَا تَقْتُلُونَ قَوْمًا نَّكَثُوا أَيْمَانَهُمْ وَهَمُّوا ۚ بِإِخْرَاجِ الرَّسُولِ وَهُمْ بَدَّءُوكُمْ أَوَّلَ
مَرَّةٍ ۚ أَتَخْشَوْنَهُمْ ۚ فَاللَّهُ أَحَقُّ أَنْ تَخْشَوْهُ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ

(मुसलमानों) भला तुम उन लोगों से क्यों नहीं लड़ते जिन्होंने अपनी कसमों को तोड़ डाला और रसूल को निकाल बाहर करना (अपने दिल में) ठान लिया था और तुमसे पहले छेड़ भी उन्होंने ही शुरू की थी क्या तुम उनसे डरते हो तो अगर तुम सच्चे ईमानदार हो तो खुदा उनसे कहीं बढ़ कर तुम्हारे डरने के काबिल है

قَاتِلُوهُمْ يُعَذِّبُهُمُ اللَّهُ بِأَيْدِيكُمْ وَيُخْزِهِمْ وَيَنْصَرِّكُمْ عَلَيْهِمْ وَيَشْفِ صُدُورَ قَوْمٍ ۚ
مُؤْمِنِينَ

इनसे (बेखौफ़ (खतर) लड़ो खुदा तुम्हारे हाथों उनकी सज़ा करेगा और उन्हें रूसवा करेगा और तुम्हें उन पर फतेह अता करेगा और ईमानदार लोगों के कलेजे ठन्डे करेगा

وَيُذْهِبْ غَيْظَ قُلُوبِهِمْ ۚ وَيَتُوبُ اللَّهُ عَلَىٰ مَنْ يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ

और उन मोमिनीन के दिल की कुदरतें जो (कुफ़ार से पहुँचती है) दफ़ा कर देगा और खुदा जिसकी चाहे तौबा कुबूल करे और खुदा बड़ा वाकिफ़कार (और) हिकमत वाला है

أَمْ حَسِبْتُمْ أَنْ تُتْرَكُوا ۚ وَلَمَّا يَعْلَمِ اللَّهُ الَّذِينَ جَاهَدُوا مِنْكُمْ وَلَمْ يَتَّخِذُوا ۚ مِنْ دُونِ
اللَّهِ وَلَا رَسُولِهِ ۚ وَلَا الْمُؤْمِنِينَ وَلِجَةً ۚ ۚ وَاللَّهُ خَبِيرٌ ۚ بِمَا تَعْمَلُونَ

क्या तुमने ये समझ लिया है कि तुम (यूँ ही) छोड़ दिए जाओगे और अभी तक तो खुदा ने उन लोगों को मुमताज़ किया ही नहीं जो तुम में के (राहे खुदा में) जिहाद करते हैं और खुदा और उसके रसूल और मोमेनीन के सिवा किसी को अपना राज़दार दोस्त नहीं बनाते और जो कुछ भी तुम करते हो खुदा उससे बाख़बर है

مَا كَانَ لِلْمُشْرِكِينَ أَنْ يَعْمُرُوا ۚ مَسْجِدَ اللَّهِ شَاهِدِينَ عَلَىٰ أَنْفُسِهِم بِالْكَفْرِ ۚ
أُولَٰئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ وَفِي النَّارِ هُمْ خَالِدُونَ

मुशरेकीन का ये काम नहीं कि जब वह अपने कुफ़र का खुद इक्क़रार करते हैं तो खुदा की मस्जिदों को (जाकर) आबाद करे यही वह लोग हैं जिनका किया कराया सब अकारत हुआ और ये लोग हमेशा जहन्नुम में रहेंगे

إِنَّمَا يَعْمُرُ مَسْجِدَ اللَّهِ مَنْ ءَامَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَأَقَامَ الصَّلَاةَ وَءَاتَى الزَّكَاةَ وَلَمْ يَخْشَ إِلَّا اللَّهَ ۚ فَعَسَىٰ أُوْلَٰئِكَ أَنْ يَكُونُوا ۚ مِنَ الْمُهْتَدِينَ

खुदा की मस्जिदों को बस सिर्फ वहीं शख्स (जाकर) आबाद कर सकता है जो खुदा और रोजे आखिरत पर ईमान लाए और नमाज़ पढ़ा करे और ज़कात देता रहे और खुदा के सिवा (और) किसी से न डरो तो अनक़रीब यही लोग हिदायत याफ़ता लोगों में से हो जाएंगे

ۚ أَجَعَلْتُمْ سِقَايَةَ الْحَاجِّ وَعِمَارَةَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ كَمَنْ ءَامَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَجَاهَدَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۚ لَا يَسْتَوِ ۚ نَ عِنْدَ اللَّهِ ۚ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ

क्या तुम लोगों ने हाजियों की सकाई (पानी पिलाने वाले) और मस्जिदुल हराम (खानाए काबा की आबादियों को उस शख्स के हमसर (बराबर) बना दिया है जो खुदा और रोजे आखिरत के दिन पर ईमान लाया और खुदा के राह में जेहाद किया खुदा के नज़दीक तो ये लोग बराबर नहीं और खुदा ज़ालिम लोगों की हिदायत नहीं करता है

الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ وَهَاجَرُوا ۚ وَجَاهَدُوا ۚ فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ أَكْظَمُ دَرَجَةً عِنْدَ اللَّهِ ۚ وَأُوْلَٰئِكَ هُمُ الْفَائِزُونَ

जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया और (खुदा के लिए) हिज़रत एख्तियार की और अपने मालों से और अपनी जानों से खुदा की राह में जिहाद किया वह लोग खुदा के नज़दीक दर्जे में कही बढ़ कर हैं और यही लोग (आला दर्जे पर) फायज़ होने वाले हैं

يُبَشِّرُهُمْ رَبُّهُمْ بِرَحْمَةٍ ۚ مِنْهُ وَرِضْوَنٍ ۚ وَجَنَّتِ ۚ لَهُمْ فِيهَا نَعِيمٌ ۚ مُّقِيمٌ

उनका परवरदिगार उनको अपनी मेहरबानी और खुशनूदी और ऐसे (हरे भरे) बागों की खुशखबरी देता है जिसमें उनके लिए दाइमी ऐश व (आराम) होगा

خُلِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۚ إِنَّ اللَّهَ عِنْدَهُ ۚ أَجْرٌ عَظِيمٌ ۚ

और ये लोग उन बागों में हमेशा अब्दआलाबाद (हमेशा हमेशा) तक रहेंगे बेशक खुदा के पास तो बड़ा बड़ा अज़्र व (सवाब) है

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ لَا تَتَّخِذُوا ۚ ءَابَاءَكُمْ وَإِخْوَانَكُمْ أَوْلِيَاءَ إِنِ اسْتَحَبُّوا ۚ الْكُفْرَ عَلَى الْإِيمَانِ ۚ وَمَنْ يَتَوَلَّهُمْ فَاُو۟لَئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ

ऐ ईमानदारों अगर तुम्हारे माँ बाप और तुम्हारे (बहन) भाई ईमान के मुकाबले कुफ़र को तरजीह देते हो तो तुम उनको (अपना) ख़ैर ख़्वाह (हमदर्द) न समझो और तुममें जो शख्स उनसे उलफ़त रखेगा तो यही लोग ज़ालिम है

قُلْ إِن كَانَ ءَابَاؤُكُمْ وَأَبْنَاؤُكُمْ وَإِخْوَانُكُمْ وَأَزْوَاجُكُمْ وَعَشِيرَتُكُمْ وَأَمْوَالٌ اقْتَرَفْتُمُوهَا وَتِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَمَسْكَنٌ تَرْضَوْنَهَا أَحَبَّ إِلَيْكُمْ مِّنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ ۚ وَجِهَادٍ فِي سَبِيلِهِ ۚ فَتَرَبَّصُوا ۚ حَتَّى يَأْتِيَ اللَّهُ بِأَمْرِهِ ۚ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ

(ऐ रसूल) तुम कह दो तुम्हारे बाप दादा और तुम्हारे बेटे और तुम्हारे भाई बन्द और तुम्हारी बीबियाँ और तुम्हारे कुनबे वाले और वह माल जो तुमने कमा के रख छोड़ा हैं और वह त्जारात जिसके मन्द पड़ जाने का तुम्हें अन्देशा है और वह मकानात जिन्हें तुम पसन्द करते हो अगर तुम्हें खुदा से और उसके रसूल से और उसकी राह में जिहाद करने से ज्यादा अज़ीज़ है तो तुम ज़रा ठहरो यहाँ तक कि खुदा अपना हुक्म (अज़ाब) मौजूद करे और खुदा नाफरमान लोगों की हिदायत नहीं करता

لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللَّهُ فِي مَوَاطِنَ كَثِيرَةٍ ۚ وَيَوْمَ حُنَيْنٍ ۚ إِذْ أَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ فَلَمْ تُغْنِ عَنْكُمْ شَيْئًا ۚ وَضَاقَتْ عَلَيْكُمُ الْأَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ ثُمَّ وَلَّيْتُم مُّدْبِرِينَ

(मुसलमानों) खुदा ने तुम्हारी बहुतेरे मक्कामात पर (गैबी) इमदाद की और (खासकर) जंग हुनैन के दिन जब तुम्हें अपनी क़सरत (तादाद) ने मगरूर कर दिया था फिर वह क़सरत तुम्हें कुछ भी काम न आयी और (तुम ऐसे घबराए कि) ज़मीन बावजूद उस वसअत (फैलाव) के तुम पर तंग हो गई तुम पीठ कर भाग निकले

ثُمَّ أَنزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ ۚ عَلَى رَسُولِهِ ۚ وَعَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَأَنزَلَ جُنُودًا لَّمْ تَرَوْهَا وَعَذَّبَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ وَذَلِكَ جَزَاءُ الْكَافِرِينَ

तब खुदा ने अपने रसूल पर और मोमिनीन पर अपनी (तरफ से) तसकीन नाज़िल फरमाई और (रसूल की खातिर से) फ़रिशतों के लश्कर भेजे जिन्हें तुम देखते भी नहीं थे और कुफ़्फ़ार पर अज़ाब नाज़िल फरमाया और काफ़िरों की यही सज़ा है

ثُمَّ يَتُوبُ ٱللَّهُ مِنۡ ۙ بَعْدِ ذَٰلِكَ عَلَىٰ مَن يَشَآءُ ۚ وَٱللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۚ

उसके बाद खुदा जिसकी चाहे तौबा कुबूल करे और खुदा बड़ा बख्शने वाला मेहरबान है

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ ۚ إِنَّمَا ٱلْمُشْرِكُونَ نَجَسٌۭ ۚ فَلَا يَفْرُبُوا۟ ٱلْمَسْجِدَ ٱلْحَرَامَ بَعْدَ عَامِهِمْ هَٰذَا ۚ وَإِن خِفْتُمْ عَيْلَةً ۚ فَسَوْفَ يُغْنِيكُمُ ٱللَّهُ مِن فَضْلِهِۦ ۚ إِن شَآءَ ۚ إِن ٱللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۚ

ऐ ईमानदारों मुशरेकीन तो निरे नजिस हैं तो अब वह उस साल के बाद मस्जिदुल हराम (खाना ए काबा) के पास फिर न फटकने पाएँ और अगर तुम (उनसे जुदा होने में) फक्रों फाक्रा से डरते हो तो अनकरीब ही खुदा तुमको अगर चाहेगा तो अपने फज़ल (करम) से ग़नीकर देगा बेशक खुदा बड़ा वाक्किफकार हिकमत वाला है

قَتِلُوا۟ ۚ ٱلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِٱللَّهِ وَلَا بِٱلْيَوْمِ ٱلْءَاخِرِ وَلَا يُحَرِّمُونَ مَا حَرَّمَ ٱللَّهُ وَرَسُولُهُۥ ۚ وَلَا يَدِينُونَ دِينَ ٱلْحَقِّ مِنَ ٱلَّذِينَ أُوتُوا۟ ۚ ٱلْكِتَٰبَ حَتَّىٰ يُعْطُوا۟ ۚ ٱلْجَزِيَّةَ عَنْ يَدٍ ۚ وَهُمْ صَٰغِرُونَ

अहले किताब में से जो लोग न तो (दिल से) खुदा ही पर ईमान रखते हैं और न रोज़े आखिरत पर और न खुदा और उसके रसूल की हराम की हुई चीज़ों को हराम समझते हैं और न सच्चे दीन ही को एख्तियार करते हैं उन लोगों से लड़े जाओ यहाँ तक कि वह लोग ज़लील होकर (अपने) हाथ से जज़िया दे

وَقَالَتِ ٱلْيَهُودُ عُزَيْرٌۭ أَبْنُ ٱللَّهِ وَقَالَتِ ٱلنَّصْرَىٰ ٱلْمَسِيحُۥ أَبْنُ ٱللَّهِ ۚ ذَٰلِكَ قَوْلُهُمْ بِأَفْوَاهِهِمْ ۚ يُضَاهُونَ قَوْلَ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ ۚ مِن قَبْلُ ۚ قَتَلَهُمُ ٱللَّهُ ۚ أَنَّىٰ يُؤْفَكُونَ

यहूद तो कहते हैं कि अज़ीज़ खुदा के बेटे हैं और ईसाई कहते हैं कि मसीहा (ईसा) खुदा के बेटे हैं ये तो उनकी बात है और (वह खुद) उन्हीं के मुँह से ये लोग भी उन्हीं काफ़िरों की सी बातें बनाने लगे जो उनसे पहले गुज़र चुके हैं खुदा उनको क़त्ल (तहस नहस) करके (देखो तो) कहाँ से कहाँ भटके जा रहे हैं

اتَّخَذُوا أَحْبَارَهُمْ وَرُهْبَنَهُمْ أَرْبَابًا مِّن دُونِ اللَّهِ وَالْمَسِيحَ ابْنَ مَرْيَمَ وَمَا أُمِرُوا إِلَّا لِيَعْبُدُوا إِلَهًا وَاحِدًا ۚ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ سُبْحَنَهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ

उन लोगों ने तो अपने खुदा को छोड़कर अपनी आलिमों को और अपने जाहिदों को और मरियम के बेटे मसीह को अपना परवरदिगार बना डाला हालाँकि उन्होंने सिवाए इसके और हुक्म ही नहीं दिया गया कि खुदाएँ यकता (सिर्फ खुदा) की इबादत करें उसके सिवा (और कोई क़ाबिले परसतिश नहीं)

يُرِيدُونَ أَن يُطْفِئُوا نُورَ اللَّهِ بِأَفْوَاهِهِمْ وَيَأْبَى اللَّهُ إِلَّا أَن يُتِمَّ نُورَهُ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ

जिस चीज़ को ये लोग उसका शरीक बनाते हैं वह उससे पाक व पाक़ीज़ा है ये लोग चाहते हैं कि अपने मुँह से (फूँक मारकर) खुदा के नूर को बुझा दें और खुदा इसके सिवा कुछ मानता ही नहीं कि अपने नूर को पूरा ही करके रहे

هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَىٰ وَدِينِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُونَ

अगरचे कुफ़्फ़ार बुरा माना करें वही तो (वह खुदा) है कि जिसने अपने रसूल (मोहम्मद) को हिदायत और सच्चे दीन के साथ (मबऊस करके) भेजता कि उसको तमाम दीनो पर ग़ालिब करे अगरचे मुशरेकीन बुरा माना करे

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ إِنَّ كَثِيرًا مِّنَ الْأَحْبَارِ وَالرُّهْبَانِ لِيَآْكُلُونَ أَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبُطْلِ وَيَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ ۚ وَالَّذِينَ يَكْنِزُونَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا ينفِقُونَهَا فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ

ऐ ईमानदारों इसमें उसमें शक़ नहीं कि (यहूद व नसारा के) बहुतेरे आलिम जाहिद लोगों के माल (नाहक़) चख जाते हैं और (लोगों को) खुदा की राह से रोकते हैं और जो लोग सोना और चाँदी जमा करते जाते हैं और उसको खुदा की राह में खर्च नहीं करते तो (ऐ रसूल) उन को दर्दनाक अज़ाब की खुशखबरी सुना दो

يَوْمَ يُحْمَىٰ عَلَيْهَا فِي نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكْوَىٰ بِهَا جِبَاهُهُمْ وَجُنُوبُهُمْ وَظُهُورُهُمْ ۗ هَٰذَا مَا كُنْتُمْ لَأَنفُسِكُمْ فَذُوقُوا ۗ مَا كُنْتُمْ تَكْنِزُونَ

(जिस दिन वह (सोना चाँदी) जहन्नुम की आग में गर्म (और लाल) किया जाएगा फिर उससे उनकी पेशानियाँ और उनके पहलू और उनकी पीठें दागी जाएँगी (और उनसे कहा जाएगा) ये वह है जिसे तुमने अपने लिए (दुनिया में) जमा करके रखा था तो (अब) अपने जमा किए का मज़ा चखो

إِنَّ عِدَّةَ الشُّهُورِ عِنْدَ اللَّهِ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا ۚ فِي كِتَابِ اللَّهِ يَوْمَ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ مِنْهَا أَرْبَعَةٌ حُرُمٌ ۚ ذَٰلِكَ الْدِّينُ الْقَيِّمُ ۚ فَلَا تَظْلِمُوا ۚ فِيهِنَّ أَنفُسُكُمْ ۚ وَقْتُلُوا ۚ الْمُشْرِكِينَ كَافَّةً ۚ كَمَا يُقْتُلُونَكُم كَافَّةً ۚ وَأَعْلَمُوا ۚ أَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ

इसमें तो शक ही नहीं कि खुदा ने जिस दिन आसमान व ज़मीन को पैदा किया (उसी दिन से) खुदा के नज़दीक खुदा की किताब (लौहे महफूज़) में महीनों की गिनती बारह महीने है उनमें से चार महीने (अदब व) हुरमत के हैं यही दीन सीधी राह है तो उन चार महीनों में तुम अपने ऊपर (कुशत व खून (मार काट) करके) जुल्म न करो और मुशरेकीन जिस तरह तुम से सबके बस मिलकर लड़ते हैं तुम भी उसी तरह सबके सब मिलकर उन से लड़ो और ये जान लो कि खुदा तो यकीनन परहेज़गारों के साथ है

إِنَّمَا النَّسِيءُ زِيَادَةٌ ۚ فِي الْكُفْرِ ۚ يُضَلُّ بِهِ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ يُحِلُّونَهُ ۚ عَامًا ۚ وَيُحَرِّمُونَهُ ۚ عَامًا ۚ لِّيُؤَاطُوا ۚ عِدَّةَ مَا حَرَّمَ اللَّهُ فَيَحِلُّوا ۚ مَا حَرَّمَ اللَّهُ ۚ زِينًا لَهُمْ ۚ سَوْءَ أَعْمَلِهِمْ ۚ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ

महीनों का आगे पीछे कर देना भी कुफ़्र ही की ज्यादाती है कि उनकी बदौलत कुफ़्रार (और) बहक जाते हैं एक बरस तो उसी एक महीने को हलाल समझ लेते हैं और (दूसरे) साल उसी महीने को हुराम कहते हैं ताकि खुदा ने जो (चार महीने) हुराम किए हैं उनकी गिनती ही पूरी कर लें और खुदा की हुराम की हुई चीज़ को हलाल कर लें उनकी बुरी (बुरी) कारस्तानियाँ उन्हें भली कर दिखाई गई हैं और खुदा काफिर लोगो को मंज़िले मक़सूद तक नहीं पहुँचाया करता

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ مَا لَكُمْ إِذَا قِيلَ لَكُمْ أَنفِرُوا ۚ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَتَأْتَلْتُمْ إِلَى
الْأَرْضِ ۚ أَرْضَيْتُمْ بِالْحَيَاةِ الدُّنْيَا مِنَ الْآخِرَةِ ۚ فَمَا مَتَّعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا فِي
الْآخِرَةِ إِلَّا قَلِيلٌ

ऐ ईमानदारों तुम्हें क्या हो गया है कि जब तुमसे कहा जाता है कि खुदा की राह में (जिहाद के लिए) निकलो तो तुम लदधड़ (ढीले) हो कर ज़मीन की तरफ झुके पड़ते हो क्या तुम आखिरत के बनिस्बत दुनिया की (चन्द रोज़ा) ज़िन्दगी को पसन्द करते थे तो (समझ लो कि) दुनिया की ज़िन्दगी का साज़ो सामान (आखिर के) ऐश व आराम के मुकाबले में बहुत ही थोड़ा है

إِلَّا تَنْفِرُوا ۚ يُعَذِّبُكُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۚ وَيَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ وَلَا تَضُرُّوهُ شَيْئًا ۚ
وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

अगर (अब भी) तुम न निकलोगे तो खुदा तुम पर दर्दनाक अज़ाब नाज़िल फरमाएगा और (खुदा कुछ मजबूर तो है नहीं) तुम्हारे बदले किसी दूसरी क़ौम को ले आएगा और तुम उसका कुछ भी बिगाड़ नहीं सकते और खुदा हर चीज़ पर क़ादिर है

إِلَّا تَنْصُرُوهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللَّهُ إِذْ أَخْرَجَهُ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ ثَانِيِ اثْنَيْنِ إِذْ هُمَا فِي الْغَارِ
إِذْ يَقُولُ لِصَاحِبِهِ ۚ لَا تَحْزَنْ إِنَّ اللَّهَ مَعَنَا ۚ فَأَنزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَيْهِ وَأَيَّدَهُ ۚ
بِجُنُودٍ ۚ لَّمْ تَرَوْهَا وَجَعَلَ كَلِمَةَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ السُّفْلَىٰ ۚ وَكَلِمَةُ اللَّهِ هِيَ الْعُلْيَا ۚ
وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ

अगर तुम उस रसूल की मदद न करोगे तो (कुछ परवाह नहीं खुदा मददगार है) उसने तो अपने रसूल की उस वक्त मदद की जब उसकी कुफ़ार (मक्का) ने (घर से) निकल बाहर किया उस वक्त सिर्फ (दो आदमी थे) दूसरे रसूल थे जब वह दोनो ग़ार (सौर) में थे जब अपने साथी को (उसकी गिरिया व ज़ारी (रोने) पर) समझा रहे थे कि घबराओ नहीं खुदा यकीनन हमारे साथ है तो खुदा ने उन पर अपनी (तरफ से) तसकीन नाज़िल फरमाई और (फ़रिश्तों के) ऐसे लश्कर से उनकी मदद की जिनको तुम लोगों ने देखा तक नहीं और खुदा ने काफ़िरों की बात नीची कर दिखाई और खुदा ही का बोल बाला है और खुदा तो ग़ालिब हिकमत वाला है

أَنْفِرُوا ۚ خِفَافًا ۚ وَثِقَالًا ۚ وَجَاهِدُوا ۚ بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنْفُسِكُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۚ ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ

(मुसलमानों) तुम हलके फुलके (हँसते) हो या भारी भरकम (मसलह) बहर हाल जब तुमको हुक्म दिया जाए फौरन चल खड़े हो और अपनी जानों से अपने मालों से खुदा की राह में जिहाद करो अगर तुम (कुछ जानते हो तो) समझ लो कि यही तुम्हारे हक में बेहतर है

لَوْ كَانَ عَرَضًا ۚ قَرِيبًا ۚ وَسَفَرًا ۚ قَاصِدًا ۚ لَآتَبَعُوكَ وَلَكِنْ ۚ بَعُدَتْ عَلَيْهِمُ الشُّقَّةُ ۚ وَسَيَحْلِفُونَ بِاللَّهِ لَوِ اسْتَطَعْنَا لَخَرَجْنَا مَعَكُمْ يُهْلِكُونَ أَنْفُسَهُمْ وَاللَّهُ يَعْلَمُ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ

(ऐ रसूल) अगर सरे दस्त फ़ायदा और सफर आसान होता तो यकीनन ये लोग तुम्हारा साथ देते मगर इन पर मुसफ़र (सफ़र) की मशक़क़त (सख्ती) तूलानी हो गई और अगर पीछे रह जाने की वज़ह से पूछोगे तो ये लोग फौरन खुदा की कसमें खाएंगे कि अगर हम में सकत होती तो हम भी ज़रूर तुम लोगों के साथ ही चल खड़े होते ये लोग झूठी कसमें खाकर अपनी जान आप हलाक किए डालते हैं और खुदा तो जानता है कि ये लोग बेशक झूठे हैं

عَفَا اللَّهُ عَنْكَ لِمَ أَذِنْتَ لَهُمْ حَتَّى يَتَبَيَّنَ لَكَ الَّذِينَ صَدَقُوا ۚ وَتَعْلَمَ الْكَاذِبِينَ

(ऐ रसूल) खुदा तुमसे दरगुज़र फरमाए तुमने उन्हें (पीछे रह जाने की) इजाज़त ही क्यों दी ताकि (तुम) अगर ऐसा न करते तो तुम पर सच बोलने वाले (अलग) ज़ाहिर हो जाते और तुम झूठों को (अलग) मालूम कर लेते

لَا يَسْتُذْنِكُ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ أَنْ يُجَاهِدُوا ۚ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ ۚ بِالْمُتَّقِينَ

(ऐ रसूल) जो लोग (दिल से) खुदा और रोज़े आखिरत पर ईमान रखते हैं वह तो अपने माल से और अपनी जानों से जिहाद (न) करने की इजाज़त माँगने के नहीं (बल्कि वह खुद जाएंगे) और खुदा परहेज़गारों से खूब वाकिफ़ है

إِنَّمَا يَسْتُنْذِرُكَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَأَرْتَابَتْ قُلُوبُهُمْ فَهُمْ فِي رَيْبِهِمْ
يَتَرَدَّدُونَ

(पीछे रह जाने की) इजाज़त तो बस वही लोग माँगेंगे जो खुदा और रोजे आखिरत पर ईमान नहीं रखते और उनके दिल (तरह तरह) के शक़ कर रहे हैं तो वह अपने शक़ में डावाँडोल हो रहे हैं

﴿ وَلَوْ أَرَادُوا ﴾ الْخُرُوجَ لَأَعَدُّوا ﴿ لَهُ ﴾ عُدَّةً ﴿ وَلَكِنْ كَرِهَ اللَّهُ ﴾ أَنْ ﴿ بِعَاثَهُمْ فَثَبَّطَهُمْ ﴾ وَقِيلَ أَقْعُدُوا ﴿ مَعَ الْقُعْدِينَ ﴾

(कि क्या करें क्या न करें) और अगर ये लोग (घर से) निकलने की ठान लेते तो (कुछ न कुछ सामान तो करते मगर (बात ये है) कि खुदा ने उनके साथ भेजने को नापसन्द किया तो उनको काहिल बना दिया और (गोया) उनसे कह दिया गया कि तुम बैठने वालों के साथ बैठे (मक्खी मारते) रहो

لَوْ خَرَجُوا ﴿ فَبِكُمْ ﴾ مَا زَادُوكُمْ إِلَّا خَبَالًا ﴿ وَلَا أَوْضَعُوا ﴿ خِلَالَكُمْ يَبْغُونَكُمُ الْفِتْنَةَ ﴾ وَفَبِكُمْ سَمَّعُونَ لَهُمْ ﴿ وَاللَّهُ عَلِيمٌ ﴿ بِالظَّالِمِينَ ﴾

अगर ये लोग तुममें (मिलकर) निकलते भी तो बस तुममें फ़साद ही बरपा कर देते और तुम्हारे हक़ में फ़ितना कराने की गरज़ से तुम्हारे दरमियान (इधर उधर) घोड़े दौड़ाते फिरते और तुममें से उनके जासूस भी हैं (जो तुम्हारी उनसे बातें बयान करते हैं) और खुदा शरीरों से खूब वाकिफ़ है

لَقَدْ ابْتِغَوْا ﴿ الْفِتْنَةَ مِنْ قَبْلُ وَقَلَّبُوا ﴿ لَكَ الْأُمُورَ حَتَّى جَاءَ الْحَقُّ وَظَهَرَ أَمْرُ اللَّهِ ﴾ وَهُمْ كُرْهُونَ

(ए रसूल) इसमें तो शक़ नहीं कि उन लोगों ने पहले ही फ़साद डालना चाहा था और तुम्हारी बहुत सी बातें उलट पुलट के यहाँ तक कि हक़ आ पहुँचा और खुदा ही का हुक्म ग़ालिब रहा और उनको नागवार ही रहा

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَقُولُ أُنْذِن لِّي وَلَا تَفْتِنِّي ۚ أَلَا فِي الْفِتْنَةِ سَقَطُوا ۗ ۚ وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيطَةٌ ۚ بِالْكَافِرِينَ

उन लोगों में से बाज़ ऐसे भी हैं जो साफ कहते हैं कि मुझे तो (पीछे रह जाने की) इजाज़त दीजिए और मुझ बला में न फँसाइए (ऐ रसूल) आगाह हो कि ये लोग खुद बला में (औंधे मुँह) गिर पड़े और जहन्नुम तो काफिरों का यक़ीनन घेरे हुए ही हैं

إِنْ تُصِيبَكَ حَسَنَةٌ ۖ تَسُوهُمْ ۚ وَإِنْ تُصِيبَكَ مُصِيبَةٌ ۖ يَقُولُوا ۚ قَدْ أَخَذْنَا أَمْرَنَا مِنْ قَبْلُ وَيَتَوَلَّوْا ۚ وَهُمْ فَارِحُونَ

तुमको कोई फायदा पहुंचा तो उन को बुरा मालूम होता है और अगर तुम पर कोई मुसीबत आ पड़ती तो ये लोग कहते हैं कि (इस वजह से) हमने अपना काम पहले ही ठीक कर लिया था और (ये कह कर) खुश (तुम्हारे पास से उठकर) वापस लौटते हैं

قُلْ لَّنْ يُصِيبَنَا إِلَّا مَا كَتَبَ اللَّهُ لَنَا هُوَ مَوْلَانَا ۚ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि हम पर हरगिज़ कोई मुसीबत पड़ नहीं सकती मगर जो खुदा ने तुम्हारे लिए (हमारी तक़दीर में) लिख दिया है वही हमारा मालिक है और ईमानदारों को चाहिए भी कि खुदा ही पर भरोसा रखें

قُلْ هَلْ تَرَبَّصُونَ بِنَا إِلَّا إِحْدَى الْحُسْنَيْنِ ۚ وَنَحْنُ نَتَرَبَّصُ بِكُمْ أَنْ يُصِيبَكُمْ اللَّهُ بِعَذَابٍ ۚ مِّنْ عِنْدِهِ ۚ أَوْ بِأَيْدِينَا ۚ فَتَرَبَّصُوا ۚ إِنَّا مَعَكُمْ مُّتَرَبِّصُونَ

(ऐ रसूल) तुम मुनाफ़िकों से कह दो कि तुम तो हमारे वास्ते (फतेह या शहादत) दो भलाइयों में से एक के ख्वाह मख्वाह मुन्तज़िर ही हो और हम तुम्हारे वास्ते उसके मुन्तज़िर हैं कि खुदा तुम पर (खास) अपने ही से कोई अज़ाब नाज़िल करे या हमारे हाथों से फिर (अच्छा) तुम भी इन्तेज़ार करो हम भी तुम्हारे साथ (साथ) इन्तेज़ार करते हैं

قُلْ أَنْفِقُوا ۚ طَوْعًا أَوْ كَرْهًا ۚ لَّنْ يُّتَقَبَلَ مِنْكُمْ ۚ إِنَّكُمْ كُنْتُمْ قَوْمًا ۚ فَسِقِينَ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि तुम लोग ख्वाह खुशी से खर्च करो या मजबूरी से तुम्हारी ख़ैरात तो कभी कुबूल की नहीं जाएगी तुम यक़ीनन बदकार लोग हो

وَمَا مَنَعَهُمْ أَنْ تُقْبَلَ مِنْهُمْ نَفَقَتُهُمْ إِلَّا أَنَّهُمْ كَفَرُوا ۖ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ۚ وَلَا يَأْتُونَ الصَّلَاةَ إِلَّا وَهُمْ كُسَالَىٰ وَلَا يُنْفِقُونَ إِلَّا وَهُمْ كَرِهُونَ

और उनकी खैरात के कुबूल किए जाने में और कोई वजह मायने नहीं मगर यही कि उन लोगों ने खुदा और उसके रसूल की नाफरमानी की और नमाज़ को आते भी हैं तो अलकसाए हुए और खुदा की राह में खर्च करते भी हैं तो बे दिली से

فَلَا تُعْجِبْكَ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ ۖ إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيُعَذِّبَهُمْ بِهَا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ أَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كَافِرُونَ

(ऐ रसूल) तुम को न तो उनके माल हैरत में डाले और न उनकी औलाद (क्योंकि) खुदा तो ये चाहता है कि उनको आल व माल की वजह से दुनिया की (चन्द रोज़) ज़िन्दगी (ही) में मुबितलाए अज़ाब करे और जब उनकी जानें निकलें तब भी वह काफिर (के काफिर ही) रहें

وَيَحْلِفُونَ بِاللَّهِ إِنَّهُمْ لَمِنْكُمْ وَمَا هُمْ مِنْكُمْ وَلَكِنَّهُمْ قَوْمٌ يَفْرَقُونَ

और (मुसलमानों) ये लोग खुदा की कसम खाएंगे फिर वह तुममें ही के हैं हालाँकि वह लोग तुममें के नहीं हैं मगर हैं ये लोग बुज़दिल हैं

لَوْ يَجِدُونَ مَلْجَأً أَوْ مَغْرَتٍ أَوْ مَدْخَلًا ۖ لَوَلَّوْا ۚ إِلَيْهِ وَهُمْ يَجْمَحُونَ

कि गर कहीं ये लोग पनाह की जगह (क़िले) या (छिपने के लिए) ग़ार या घुस बैठने की कोई (और) जगह पा जाए तो उसी तरफ रस्सियाँ तोड़ाते हुए भाग जाएँ

وَمِنْهُمْ مَنْ يَلْمِزُكَ فِي الصَّدَقَاتِ فَإِنْ أُعْطُوا مِنْهَا رَضُوا ۚ وَإِنْ لَمْ يُعْطُوا مِنْهَا إِذَا هُمْ يَسْخَطُونَ

(ऐ रसूल) उनमें से कुछ तो ऐसे भी हैं जो तुम्हें खैरात (की तकसीम) में (ख्वाह मा ख्वाह) इल्ज़ाम देते हैं फिर अगर उनमें से कुछ (माकूल मिक्दार(हिस्सा)) दे दिया गया तो खुश हो गए और अगर उनकी मर्ज़ी के मुवाफ़िक़ उसमें से उन्हें कुछ नहीं दिया गया तो बस फौरन ही बिगड़ बैठे

وَلَوْ أَنَّهُمْ رَضُوا ۚ مَا ءَاتَاهُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ ۚ وَقَالُوا ۚ حَسْبُنَا اللَّهُ سَيُؤْتِينَا اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ ۚ وَرَسُولُهُ ۚ إِنَّا إِلَى اللَّهِ رُغْبُونَ

और जो कुछ खुदा ने और उसके रसूल ने उनको अता फरमाया था अगर ये लोग उस पर राज़ी रहते और कहते कि खुदा हमारे वास्ते काफी है (उस वक्त नहीं तो) अनकरीब ही खुदा हमें अपने फज़ल व करम से उसका रसूल दे ही देगा हम तो यकीनन अल्लाह ही की तरफ लौ लगाए बैठे हैं

ۚ إِنَّمَا الصَّدَقَتُ لِلْفُقَرَاءِ وَالْمَسْكِينِ وَالْعَمِلِينَ عَلَيْهَا وَالْمُؤَلَّفَةِ قُلُوبُهُمْ وَفِي الرِّقَابِ وَالْغُرَمِينَ وَفِي سَبِيلِ اللَّهِ وَأَبْنِ السَّبِيلِ ۚ فَرِيضَةً ۚ مِّنَ اللَّهِ ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۚ

(तो उनका क्या कहना था) ख़ैरात तो बस खास फकीरों का हक़ है और मोहताजों का और उस (ज़कात वग़ैरह) के कारिन्दों का और जिनकी तालीफ़ क़लब की गई है (उनका) और (जिन की) गर्दनो में (गुलामी का फन्दा पड़ा है उनका) और ग़द्दारों का (जो खुदा से अदा नहीं कर सकते) और खुदा की राह (जिहाद) में और परदेसियों की क़फ़ालत में खर्च करना चाहिए ये हुक्क़ खुदा की तरफ से मुकर्रर किए हुए हैं और खुदा बड़ा वाक़िफ़ कार हिकमत वाला है

وَمِنْهُمْ الَّذِينَ يُؤْذُونَ النَّبِيَّ وَيَقُولُونَ هُوَ أُذُنٌ ۚ قُلْ أُذُنٌ خَيْرٌ ۚ لَّكُمْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَيُؤْمِنُ لِلْمُؤْمِنِينَ وَرَحْمَةً ۚ لِلَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ مِنْكُمْ ۚ وَالَّذِينَ يُؤْذُونَ رَسُولَ اللَّهِ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۚ

और उसमें से बाज़ ऐसे भी हैं जो (हमारे) रसूल को सताते हैं और कहते हैं कि बस ये कान ही (कान) हैं (ऐ रसूल) तुम कह दो कि (कान तो हैं मगर) तुम्हारी भलाई सुन्ने के कान हैं कि खुदा पर ईमान रखते हैं और मोमिनीन की (बातों) का यकीन रखते हैं और तुममें से जो लोग ईमान ला चुके हैं उनके लिए रहमत और जो लोग रसूल खुदा को सताते हैं उनके लिए दर्दनाक अज़ाब हैं

يَخْلِفُونَ بِاللَّهِ لَكُمْ لِيَرْضَوْكُمْ وَاللَّهُ وَرَسُولُهُ ۚ أَحَقُّ أَنْ يُرْضَوْهُ إِنْ كَانُوا ۚ مُؤْمِنِينَ

(मुसलमानों) ये लोग तुम्हारे सामने खुदा की क़समें खाते हैं ताकि तुम्हें राज़ी कर ले हालाँकि अगर ये लोग सच्चे ईमानदार हैं

أَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّهُ؟ مَنْ يُحَادِدِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ؟ فَأَنَّ لَهُ؟ نَارَ جَهَنَّمَ خُلِدًا فِيهَا؟ ذَلِكَ الْخِزْيُ الْعَظِيمُ

तो खुदा और उसका रसूल कहीं ज्यादा हकदार है कि उसको राजी रखें क्या ये लोग ये भी नहीं जानते कि जिस शख्स ने खुदा और उसके रसूल की मुखालेफत की तो इसमें शक ही नहीं कि उसके लिए जहन्नुम की आग (तैयार रखी) है

يَحْذَرُ الْمُنَافِقُونَ أَنْ تُنْزَلَ عَلَيْهِمْ سُورَةٌ؟ تُنَبِّئُهُمْ بِمَا فِي قُلُوبِهِمْ؟ قُلْ أَسْتَهْزِئُوكُمُ؟ إِنَّ اللَّهَ مُخْرِجٌ؟ مَا تَحْذَرُونَ

जिसमें वह हमेशा (जलता भुनता) रहेगा यही तो बड़ी रूसवाई है मुनाफिकीन इस बात से डरते हैं कि (कहीं ऐसा न हो) इन मुलसमानों पर (रसूल की माअरफत) कोई सूरा नाज़िल हो जाए जो उनको जो कुछ उन मुनाफिकीन के दिल में है बता दे (ऐ रसूल) तुम कह दो कि (अच्छा) तुम मसखरापन किए जाओ

وَلَيْنَ سَأَلْتَهُمْ لَيَقُولُنَّ إِنَّمَا كُنَّا نَخُوضُ وَنَلْعَبُ؟ قُلْ أَبِاللَّهِ وَءَايَاتِهِ؟ وَرَسُولِهِ؟ كُنْتُمْ تَسْتَهْزِئُونَ

जिससे तुम डरते हो खुदा उसे ज़रूर जाहिर कर देगा और अगर तुम उनसे पूछो (कि ये हरकत थी) तो ज़रूर यूं ही कहेंगे कि हम तो यूं ही बातचीत (दिल्लीगी) बाज़ी ही कर रहे थे तुम कहो कि हाए क्या तुम खुदा से और उसकी आयतों से और उसके रसूल से हँसी कर रहे थे

لَا تَعْتَذِرُوا؟ قَدْ كَفَرْتُمْ بَعْدَ إِيمَانِكُمْ؟ إِنَّ نَعْفُ عَنْ طَائِفَةٍ؟ مِّنْكُمْ نُعَذِّبُ طَائِفَةً؟ بِأَنَّهُمْ كَانُوا؟ مُجْرِمِينَ

अब बातें न बनाओं हक तो ये हैं कि तुम ईमान लाने के बाद काफ़िर हो बैठे अगर हम तुममें से कुछ लोगों से दरगुज़र भी करें तो हम कुछ लोगों को सज़ा ज़रूर देंगे इस वजह से कि ये लोग कुसूरवार ज़रूर हैं

الْمُنْفِقُونَ وَالْمُنْفِقَاتُ بَعْضُهُمْ مِّنْ بَعْضٍ ۚ يَأْمُرُونَ بِالْمُنْكَرِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمَعْرُوفِ وَيَقْبِضُونَ أَيْدِيَهُمْ ۚ نَسُوا اللَّهَ فَنَسِيَهُمْ ۚ إِنَّ الْمُنْفِقِينَ هُمُ الْفَاسِقُونَ

मुनाफिक़ मर्द और मुनाफिक़ औरतें एक दूसरे के बाहम जिन्स हैं कि (लोगों को) बुरे काम का तो हुक्म करते हैं और नेक कामों से रोकते हैं और अपने हाथ (राहे खुदा में खर्च करने से) बन्द रखते हैं (सच तो यह है कि) ये लोग खुदा को भूल बैठे तो खुदा ने भी (गोया) उन्हें भुला दिया बेशक मुनाफिक़ बदचलन है

وَعَدَ اللَّهُ الْمُنْفِقِينَ وَالْمُنْفِقَاتِ وَالْكُفَّارَ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ هِيَ حَسْبُهُمْ ۚ وَلَعَنَهُمُ اللَّهُ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ۚ

मुनाफिक़ मर्द और मुनाफिक़ औरतें और काफिरों से खुदा ने जहन्नुम की आग का वायदा तो कर लिया है कि ये लोग हमेशा उसी में रहेंगे और यही उन के लिए काफ़ी है और खुदा ने उन पर लानत की है और उन्हीं के लिए दाइमी (हमेशा रहने वाला) अज़ाब है

كَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ كَانُوا أَشَدَّ مِنْكُمْ قُوَّةً ۚ وَكَثُرَ أَمْوَالُهُمْ ۚ وَأَوْلَدُوا ۚ فَاسْتَمْتَعُوا بِخَلْقِهِمْ ۚ فَاسْتَمْتَعْتُمْ بِخَلْقِكُمْ كَمَا أَصْنَعُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ بِخَلْقِهِمْ وَخُضْتُمْ كَالَّذِي خَاضُوا ۚ أَوَلَيْكُمْ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۚ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْخَسِرُونَ

(मुनाफिक़ो तुम्हारी तो) उनकी मसल है जो तुमसे पहले थे वह लोग तुमसे क़वत में (भी) ज्यादा थे और औलाद में (भी) कहीं बढ़ कर तो वह अपने हिस्से से भी फ़ायदा उठा हो चुके तो जिस तरह तुम से पहले लोग अपने हिस्से से फ़ायदा उठा चुके हैं इसी तरह तुम ने अपने हिस्से से फ़ायदा उठा लिया और जिस तरह वह बातिल में घुसे रहे उसी तरह तुम भी घुसे रहे ये वह लोग हैं जिन का सब किया धरा दुनिया और आखिरत (दोनों) में अकारत हुआ और यही लोग घाटे में हैं

أَلَمْ يَأْتِهِمْ نَبَأُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَوْمِ نُوحٍ ۖ وَعَادٍ ۚ وَثَمُودَ وَقَوْمِ إِبْرَاهِيمَ وَأَصْحَابِ
مَدْيَنَ وَالْمُؤْتَفِكَاتِ ۚ أَتَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ ۚ فَمَا كَانَ اللَّهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلَكِنْ كَانُوا ۚ
أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ

क्या इन मुनाफिकों को उन लोगों की खबर नहीं पहुँची है जो उनसे पहले हो गुजरे हैं नूह की क़ौम और आद और समूद और
इबराहीम की क़ौम और मदीयन वाले और उलटी हुई बस्तियों के रहने वाले कि उनके पास उनके रसूल वाजेए (और रौशन)
मौजिज़े लेकर आए तो (वह मुब्तिलाए अज़ाब हुए) और खुदा ने उन पर जुल्म नहीं किया मगर ये लोग खुद अपने ऊपर जुल्म
करते थे

وَالْمُؤْمِنُونَ وَالْمُؤْمِنَاتُ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ ۚ يَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ
الْمُنْكَرِ وَيُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَيُطِيعُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۚ أُو۟لَٰئِكَ
سَيَرْحَمُهُمُ اللَّهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۚ

और ईमानदार मर्द और ईमानदार औरते उनमें से बाज़ के बाज़ रफीक है और नामज़ पाबन्दी से पढ़ते हैं और ज़कात देते हैं और
खुदा और उसके रसूल की फरमाबरदारी करते हैं यही लोग हैं जिन पर खुदा अनक्ररीब रहम करेगा बेशक खुदा ग़ालिब हिकमत
वाला है

وَعَدَ اللَّهُ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ جَنَّاتٍ ۖ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا
وَمَسْكَنَ طَيِّبَةً ۚ فِي جَنَّاتِ عَدْنٍ ۚ وَرِضْوَانٌ ۚ مِّنَ اللَّهِ أَكْبَرُ ۚ ذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ
الْعَظِيمُ

खुदा ने ईमानदार मर्दों और ईमानदारा औरतों से (बेहश्त के) उन बाग़ों का वायदा कर लिया है जिनके नीचे नहरें जारी हैं और
वह उनमें हमेशा रहेंगे (बेहश्त) अदन के बाग़ों में उम्दा उम्दा मकानात का (भी वायदा फरमाया) और खुदा की खुशनूदी उन
सबसे बालातर है- यही तो बड़ी (आला दर्जे की) कामयाबी है

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنَافِقِينَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ ۚ وَمَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ ۚ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ

ऐ रसूल कुफ़्कार के साथ (तलवार से) और मुनाफ़िकों के साथ (ज़बान से) जिहाद करो और उन पर सख्ती करो और उनका ठिकाना तो जहन्नुम ही है और वह (क्या) बुरी जगह है

يَحْلِفُونَ بِاللَّهِ مَا قَالُوا ۚ وَلَقَدْ قَالُوا ۚ كَلِمَةَ الْكُفْرِ وَكَفَرُوا ۚ بَعْدَ إِسْلَامِهِمْ وَهُمْ مُّوَا ۚ بِمَا لَمْ يَنَالُوا ۚ وَمَا نَقَمُوا ۚ إِلَّا أَنْ أَغْنَاهُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ ۚ مِنْ فَضْلِهِ ۚ فَإِنْ يَتُوبُوا ۚ يَكُ خَيْرًا ۚ لَهُمْ ۚ وَإِنْ يَتَوَلَّوْا ۚ يُعَذِّبُهُمُ اللَّهُ عَذَابًا أَلِيمًا ۚ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۚ وَمَا لَهُمْ فِي الْأَرْضِ مِنْ وَلِيٍّ ۚ وَلَا نَصِيرٍ ۚ

ये मुनाफ़ेक़ीन खुदा की क़समें खाते हैं कि (कोई बुरी बात) नहीं कही हालाँकि उन लोगों ने कुफ़्र का कलमा ज़रूर कहा और अपने इस्लाम के बाद काफ़िर हो गए और जिस बात पर क़ाबू न पा सके उसे ठान बैठे और उन लोगों ने (मुसलमानों से) सिर्फ़ इस वजह से अदावत की कि अपने फ़ज़ल व करम से खुदा और उसके रसूल ने दौलत मन्द बना दिया है तो उनके लिए उसमें ख़ैर है कि ये लोग अब भी तौबा कर लें और अगर ये न मानेंगे तो खुदा उन पर दुनिया और आख़िरत में दर्दनाक अज़ाब नाज़िल फरमाएगा और तमाम दुनिया में उन का न कोई हामी होगा और न मददगार

ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ عٰهَدَ اللّٰهَ لَئِنْ ءَاتٰنَا مِنْ فَضْلِهِ ۚ لَنَصَّدَّقَنَّ وَلَنَكُوْنَنَّ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ

और इन (मुनाफ़ेक़ीन) में से बाज़ ऐसे भी हैं जो खुदा से क़ौल क़रार कर चुके थे कि अगर हमें अपने फ़ज़ल (व करम) से (कुछ माल) देगा तो हम ज़रूर ख़ैरात किया करेंगे और नेकोकार बन्दे हो जाएँगे

فَلَمّآ ءَاتٰهُمْ مِّنْ فَضْلِهِ ۚ بَخِلُوْا ۚ بِهٖ ۚ وَتَوَلَّوْا ۚ وَهُمْ مُّعْرِضُوْنَ

तो जब खुदा ने अपने फ़ज़ल (व करम) से उन्हें अता फरमाया-तो लगे उसमें बुख़ल करने और कतराकर मुंह फेरने

فَأَعْقَبَهُمْ نِفَاقًا ۖ فِي قُلُوبِهِم إِلَى يَوْمِ يَلْقَوْنَهُ ۚ بِمَا أَخْلَفُوا ۙ اللَّهُ مَا وَعَدُوهُ وَبِمَا كَانُوا ۙ يَكْذِبُونَ

फिर उनसे उनके खामयाजे (बदले) में अपनी मुलाकात के दिन (क़यामत) तक उनके दिल में (गोया खुद) निफाक डाल दिया इस वजह से उन लोगों ने जो खुदा से वायदा किया था उसके खिलाफ किया और इस वजह से कि झूठ बोला करते थे

أَلَمْ يَعْلَمُوا ۙ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ سِرَّهُمْ وَنَجْوَاهُمْ وَأَنَّ اللَّهَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ

क्या वह लोग इतना भी न जानते थे कि खुदा (उनके) सारे भेद और उनकी सरगोशी (सब कुछ) जानता है और ये कि ग़ैब की बातों से खूब आगाह है

الَّذِينَ يَلْمِزُونَ الْمُطَّوِّعِينَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ فِي الصَّدَقَاتِ وَالَّذِينَ لَا يَجِدُونَ إِلَّا جُهْدَهُمْ فَيَسْخَرُونَ مِنْهُمْ ۙ سَخِرَ اللَّهُ مِنْهُمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ

जो लोग दिल खोलकर ख़ैरात करने वाले मोमिनीन पर (रियाकारी का) और उन मोमिनीन पर जो सिर्फ अपनी शफ़क़वत (मेहनत) की मज़दूरी पाते (शेखी का) इल्ज़ाम लगाते हैं फिर उनसे मसख़रापन करते तो खुदा भी उन से मसख़रापन करेगा और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है

أَسْتَغْفِرُ لَهُمْ أَوْ لَا تَسْتَغْفِرُ لَهُمْ إِنْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ سَبْعِينَ مَرَّةً ۙ فَلَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَفَرُوا ۙ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ۚ ۙ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ

(ऐ रसूल) ख़्वाह तुम उन (मुनाफ़िकों) के लिए मग़फ़िरत की दुआ माँगों या उनके लिए मग़फ़िरत की दुआ न माँगों (उनके लिए बराबर है) तुम उनके लिए सत्तर बार भी बख़्शिश की दुआ माँगोगे तो भी खुदा उनको हरगिज़ न बख़्शेगा ये (सज़ा) इस सबब से है कि उन लोगों ने खुदा और उसके रसूल के साथ कुफ़्र किया और खुदा बदकार लोगों को मंज़िलें मकसूद तक नहीं पहुँचाया करता

فَرِحَ الْمُخَلَّفُونَ بِمَقْعَدِهِمْ خِلْفَ رَسُولِ اللَّهِ وَكَرِهُوا ۚ أَنْ يُجَاهِدُوا ۚ بِأَمْوَالِهِمْ
وَأَنْفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَقَالُوا ۚ لَا تَنْفِرُوا ۚ فِي الْحَرِّ ۚ قُلْ نَارُ جَهَنَّمَ أَشَدُّ
حَرًّا ۚ أَلَا لَوْ كَانُوا يَفْقَهُونَ

(जंगे तबूक में) रसूले खुदा के पीछे रह जाने वाले अपनी जगह बैठ रहने (और जिहाद में न जाने) से खुश हुए और अपने माल और आपनी जानों से खुदा की राह में जिहाद करना उनको मकरू मालूम हुआ और कहने लगे (इस) गर्मी में (घर से) न निकलो (ऐ रसूल) तुम कह दो कि जहन्नुम की आग (जिसमें तुम चलोगे उससे कहीं ज्यादा गर्म है

فَلْيَضْحَكُوا ۚ قَلِيلًا ۚ وَلْيَبْكُوا ۚ كَثِيرًا ۚ جَزَاءً ۚ بِمَا كَانُوا ۚ يَكْسِبُونَ

अगर वह कुछ समझें जो कुछ वह किया करते थे उसके बदले उन्हें चाहिए कि वह बहुत कम हँसें और बहुत रोएँ

فَإِنْ رَجَعَكَ اللَّهُ إِلَى طَائِفَةٍ ۚ مِنْهُمْ فَاسْتَدْنُوكَ لِالخُرُوجِ فَقُلْ لَنْ تَخْرُجُوا ۚ مَعِيَ
أَبَدًا ۚ وَلَنْ تُقَاتِلُوا ۚ مَعِيَ عَدُوًّا ۚ إِنَّكُمْ رَضِيتُمْ بِالْقُعُودِ أَوَّلَ مَرَّةٍ ۚ فَاقْعُدُوا ۚ مَعَ
الْخُلَفَاءِ

तो (ऐ रसूल) अगर खुदा तुम इन मुनाफिकीन के किसी गिरोह की तरफ (जिहाद से सहीसालिम) वापस लाए फिर तुमसे (जिहाद के वास्ते) निकलने की इजाजत माँगे तो तुम साफ़ कह दो कि तुम मेरे साथ (जिहाद के वास्ते) हरगिज़ न निकलने पाओगे और न हरगिज़ दुश्मन से मेरे साथ लड़ने पाओगे जब तुमने पहली मरतबा (घर में) बैठे रहना पसन्द किया तो (अब भी) पीछे रह जाने वालों के साथ (घर में) बैठे रहो

وَلَا تُصَلِّ عَلَى أَحَدٍ ۚ مِنْهُمْ مَاتَ أَبَدًا ۚ وَلَا تَقُمْ عَلَى قَبْرِهِ ۚ إِنَّهُمْ كَفَرُوا ۚ بِاللَّهِ
وَرَسُولِهِ ۚ وَمَاتُوا ۚ وَهُمْ فَسِقُونَ

और (ऐ रसूल) उन मुनाफिकीन में से जो मर जाए तो कभी ना किसी पर नमाज़े ज़नाज़ा पढ़ना और न उसकी क़ब्र पर (जाकर) खड़े होना इन लोगों ने यकीनन खुदा और उसके रसूल के साथ कुफ़्र किया और बदकारी की हालत में मर (भी) गए

وَلَا تُعْجِبْكَ أَمْوَالُهُمْ وَأَوْلَادُهُمْ ۖ إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ أَنْ يُعَذِّبَهُمْ بِهَا فِي الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ
أَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كَافِرُونَ

और उनके माल और उनकी औलाद (की कसरत) तुम्हें ताज्जुब (हैरत) में न डाले (क्योंकि) खुदा तो बस ये चाहता है कि दुनिया में भी उनके माल और औलाद की बदौलत उनको अज़ाब में मुब्तिला करे और उनकी जान निकालने लगे तो उस वक्त भी ये काफ़िर (के काफ़िर ही) रहें

وَإِذَا أَنْزَلَتْ سُورَةٌ أَنْ ءَامِنُوا بِاللَّهِ وَجَاهِدُوا ۖ مَعَ رَسُولِهِ اسْتَأْذَنَكَ أُو۟لُوا
الطَّوْلِ مِنْهُمْ وَقَالُوا ۖ ذَرْنَا نَكُنْ مَعَ الْقُعْدِينَ

और जब कोई सूरा इस बारे में नाज़िल हुआ कि खुदा को मानों और उसके रसूल के साथ जिहाद करो तो जो उनमें से दौलत वाले हैं वह तुमसे इजाज़त मांगते हैं और कहते हैं कि हमें (यहीं छोड़ दीजिए) कि हम भी (घर बैठने वालों के साथ (बैठे) रहें

رَضُوا ۖ بِأَنْ يَكُونُوا ۖ مَعَ الْخَوَالِفِ وَطُبِعَ عَلَى قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُونَ

ये इस बात से खुश हैं कि पीछे रह जाने वालों (औरतों, बच्चों, बीमारों के साथ बैठे) रहें और (गोया) उनके दिल पर मोहर कर दी गई तो ये कुछ नहीं समझते

لَكِنَّ الرُّسُولَ وَالَّذِينَ ءَامَنُوا ۖ مَعَهُ ۖ جَاهِدُوا ۖ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ ۖ وَأُو۟لَآئِكَ لَهُمُ
الْخَيْرَاتُ ۖ وَأُو۟لَآئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ

मगर रसूल और जो लोग उनके साथ ईमान लाए हैं उन लोगों ने अपने अपने माल और अपनी अपनी जानों से जिहाद किया- यही वह लोग हैं जिनके लिए (हर तरह की) भलाइयाँ हैं और यही लोग कामयाब होने वाले हैं

أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ جَنَّاتٍ ۖ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۖ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ

खुदा ने उनके वास्ते (बेहश्त) के वह (हरे भरे) बाग़ तैयार कर रखे हैं जिनके (दरख्तों के) नीचे नहरे जारी हैं (और ये) इसमें हमेशा रहेंगे यही तो बड़ी कामयाबी है

وَجَاءَ الْمُعَذِّرُونَ مِنَ الْأَعْرَابِ لِيُؤْذَنَ لَهُمْ وَقَعَدَ الَّذِينَ كَذَبُوا ۖ اللَّهُ وَرَسُولُهُ ۚ ۚ
سَيُصِيبُ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ مِنْهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۚ

और (तुम्हारे पास) कुछ हीला करने वाले गवार देहाती (भी) आ मौजूद हुए ताकि उनको भी (पीछे रह जाने की) इजाज़त दी जाए और जिन लोगों ने खुदा और उसके रसूल से झूठ कहा था वह (घर में) बैठ रहे (आए तक नहीं) उनमें से जिन लोगों ने कुफ़्र एख्तेयार किया अनक़रीब ही उन पर दर्दनाक अज़ाब आ पहुँचेगा

لَيْسَ عَلَى الضُّعَفَاءِ وَلَا عَلَى الْمَرْضَىٰ وَلَا عَلَى الَّذِينَ لَا يَجِدُونَ مَا يَنْفِقُونَ حَرَجٌ
إِذَا نَصَحُوا ۚ لِلَّهِ وَرَسُولِهِ ۚ ۚ مَا عَلَى الْمُحْسِنِينَ مِنْ سَبِيلٍ ۚ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ
رَّحِيمٌ ۚ

(ऐ रसूल जिहाद में न जाने का) न तो कमज़ोरों पर कुछ गुनाह है न बीमारों पर और न उन लोगों पर जो कुछ नहीं पाते कि खर्च करें बशर्ते कि ये लोग खुदा और उसके रसूल की खैर ख्वाही करें नेकी करने वालों पर (इल्ज़ाम की) कोई सबील नहीं और खुदा बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है

وَلَا عَلَى الَّذِينَ إِذَا مَا أَتَوْكَ لِتَحْمِلَهُمْ قُلْتَ لَا أَجِدُ مَا أَحْمِلُكُمْ عَلَيْهِ تَوَلَّوْا ۚ وَأَعْيُنُهُمْ
تَفِيزُ مِنَ الدَّمْعِ حَزَنًا أَلَّا يَجِدُوا ۚ ۚ مَا يَنْفِقُونَ

और न उन्हीं लोगों पर कोई इल्ज़ाम है जो तुम्हारे पास आए कि तुम उनके लिए सवारी बाहम पहुँचा दो और तुमने कहा कि मेरे पास (तो कोई सवारी) मौजूद नहीं कि तुमको उस पर सवार करूँ तो वह लोग (मजबूरन) फिर गए और हसरत (व अफसोस) उसे उस ग़म में कि उन को खर्च मयस्सर न आया

ۚ إِنَّمَا السَّبِيلُ عَلَى الَّذِينَ يَسْتَأْذِنُونَكَ وَهُمْ أَغْنِيَاءُ ۚ رَضُوا ۚ بِأَنْ يَكُونُوا ۚ مَعَ
الْخَوَالِفِ وَطَبَعَ اللَّهُ عَلَى قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ

उनकी आँखों से आँसू जारी थे (इल्ज़ाम की) सबील तो सिर्फ़ उन्हीं लोगों पर है जिन्होंने बावजूद मालदार होने के तुमसे (जिहाद में) न जाने की इजाज़त चाही और उनके पीछे रह जाने वाले (औरतों, बच्चों) के साथ रहना पसन्द आया और खुदा ने उनके दिलों पर (गोया) मोहर कर दी है तो ये लोग कुछ नहीं जानते

يَعْتَذِرُونَ إِلَيْكُمْ إِذَا رَجَعْتُمْ إِلَيْهِمْ ۚ قُلْ لَا تَعْتَذِرُوا ۖ لَنْ تُؤْمِنَ لَكُمْ قَدْ نَبَأْنَا اللَّهُ مِنْ
 أَخْبَارِكُمْ ۚ وَسَيَرَى اللَّهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُولُهُ ۚ ثُمَّ تُرَدُّونَ إِلَىٰ عِلْمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ
 فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ

जब तुम उनके पास (जिहाद से लौट कर) वापस आओगे तो ये (मुनाफिकीन) तुमसे (तरह तरह) की माअज़रत करेंगे (ऐ रसूल) तुम कह दो कि बातें न बनाओ हम हरगिज़ तुम्हारी बात न मानेंगे (क्योंकि) हमें तो खुदा ने तुम्हारे हालात से आगाह कर दिया है अनक़ीरब खुदा और उसका रसूल तुम्हारी कारस्तानी को मुलाहज़ा फरमाएंगे फिर तुम ज़ाहिर व बातिन के जानने वालों (खुदा) की हुज़ूरी में लौटा दिए जाओगे तो जो कुछ तुम (दुनिया में) करते थे (ज़रा ज़रा) बता देगा

سَيَحْلِفُونَ بِاللَّهِ لَكُمْ إِذَا أُنْقَلِبْتُمْ إِلَيْهِمْ لَتُعَرِّضُوا ۚ عَنْهُمْ ۚ فَأَعْرِضُوا ۚ عَنْهُمْ ۚ
 إِنَّهُمْ رِجْسٌ ۚ وَمَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ جَزَاءً ۚ بِمَا كَانُوا ۚ يَكْسِبُونَ

जब तुम उनके पास (जिहाद से) वापस आओगे तो तुम्हारे सामने खुदा की क़समें खाएंगे ताकि तुम उनसे दरगुज़र करो तो तुम उनकी तरफ से मुँह फेर लो बेशक ये लोग नापाक हैं और उनका ठिकाना जहन्नूम है (ये) सज़ा है उसकी जो ये (दुनिया में) किया करते थे

يَحْلِفُونَ لَكُمْ لَتَرْضَوْا ۚ عَنْهُمْ ۚ فَإِنْ تَرْضَوْا ۚ عَنْهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يَرْضَىٰ عَنِ الْقَوْمِ
 الْفَاسِقِينَ

तुम्हारे सामने ये लोग क़समें खाते हैं ताकि तुम उनसे राज़ी हो (भी) जाओ तो खुदा बदकार लोगों से हरगिज़ कभी राज़ी नहीं होगा

الْأَعْرَابُ أَشَدُّ كُفْرًا ۚ وَنِفَاقًا ۚ وَأَجْدَرُ أَلَّا يَعْلَمُوا ۚ حُدُودَ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ عَلَىٰ
 رَسُولِهِ ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۚ

(ये) अरब के गँवार देहाती कुफ़र व निफाक में बड़े सख्त हैं और इसी काबिल हैं कि जो किताब खुदा ने अपने रसूल पर नाज़िल फरमाई है उसके एहक़ाम न जानें और खुदा तो बड़ा दाना हकीम है

وَمِنَ الْأَعْرَابِ مَنْ يَتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ مَغْرَمًا ۖ وَيَتَرَبَّصُ بِكُمُ الدَّوَائِرَ ۚ عَلَيْهِمْ دَائِرَةُ
السَّوْءِ ۚ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۚ

और कुछ गँवार देहाती (ऐसे भी हैं कि जो कुछ खुदा की) राह में खर्च करते हैं उसे तावान (जुमाना) समझते हैं और तुम्हारे हक़ में (ज़माने की) गर्दिशों के मुन्तज़िर (इन्तेज़ार में) हैं उन्हीं पर (ज़माने की) बुरी गर्दिश पड़े और खुदा तो सब कुछ सुनता जानता है

وَمِنَ الْأَعْرَابِ مَنْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَيَتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ قُرْبًا عِنْدَ اللَّهِ
وَصَلَوَاتِ الرَّسُولِ ۚ أَلَا إِنَّهَا قُرْبَةٌ ۚ لَهُمْ ۚ سَيُدْخِلُهُمُ اللَّهُ فِي رَحْمَتِهِ ۚ ۚ إِنَّ اللَّهَ
غَفُورٌ ۚ رَحِيمٌ ۚ

और कुछ देहाती तो ऐसे भी हैं जो खुदा और आखिरत पर ईमान रखते हैं और जो कुछ खर्च करते हैं उसे खुदा की (बारगाह में) नज़दीकी और रसूल की दुआओं का ज़रिया समझते हैं आगाह रहो वाकई ये (खैरात) ज़रूर उनके तक़्रूब (क़रीब होने का) का बाइस है खुदा उन्हें बहुत जल्द अपनी रहमत में दाख़िल करेगा बेशक़ खुदा बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है

وَالسَّبِقُونَ الْأَوَّلُونَ مِنَ الْمُهَاجِرِينَ وَالْأَنْصَارِ وَالَّذِينَ اتَّبَعُوهُمْ بِإِحْسَنٍ ۚ رَضِيَ اللَّهُ
عَنْهُمْ وَرَضُوا ۚ عَنْهُ وَأَعَدَّ لَهُمْ جَنَّاتٍ ۚ تَجْرِي تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۚ ۚ
ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ

और मुहाजिरीन व अन्सार में से (ईमान की तरफ़) सबक़त (पहल) करने वाले और वह लोग जिन्होंने नेक नीयती से (कुबूलें ईमान में उनका साथ दिया खुदा उनसे राज़ी और वह खुदा से खुश और उनके वास्ते खुदा ने (वह हरे भरे) बाग़ जिन के नीचे नहरें जारी हैं तैयार कर रखे हैं वह हमेशा अब्दआलाबाद (हमेशा) तक उनमें रहेंगे यही तो बड़ी कामयाबी है

وَمِمَّنْ حَوْلَكُم مِّنَ الْأَعْرَابِ مُنْفِقُونَ ۚ وَمِنْ أَهْلِ الْمَدِينَةِ ۚ مَرْدُوا ۚ عَلَى الْنِّفَاقِ لَا
تَعْلَمُهُمْ ۚ ۚ نَحْنُ نَعْلَمُهُمْ ۚ سَنُعَذِّبُهُمْ مَّرَّتَيْنِ ثُمَّ يُرَدُّونَ إِلَىٰ عَذَابٍ عَظِيمٍ ۚ

और (मुसलमानों) तुम्हारे एतराफ़ (आस पास) के गँवार देहातियों में से बाज़ मुनाफ़िक़ (भी) हैं और खुद मदीने के रहने वालों में से भी (बाज़ मुनाफ़िक़ हैं) जो निफ़ाक़ पर अड़ गए हैं (ऐ रसूल) तुम उन को नहीं जानते (मगर) हम उनको (खूब) जानते हैं अनक़रीब हम (दुनिया में) उनकी दोहरी सज़ा करेंगे फिर ये लोग (क़यामत में) एक बड़े अज़ाब की तरफ़ लौटाए जाएँगे

وَأَخْرُونَ أَعْتَرَفُوا ۚ بِذُنُوبِهِمْ خَلَطُوا ۚ عَمَلًا ۚ صَالِحًا ۚ وَأَخَرَ سَيِّئًا عَسَىٰ اللَّهُ أَن يَتُوبَ عَلَيْهِمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ ۚ رَّحِيمٌ

और कुछ लोग हैं जिन्होंने अपने गुनाहों का (तो) एकरार किया (मगर) उन लोगों ने भले काम को और कुछ बुरे काम को मिला जुला (कर गोलमाल) कर दिया करीब है कि खुदा उनकी तौबा कुबूल करे (क्योंकि) खुदा तो यक़ीनी बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है

خُذْ مِنْ أَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً ۚ تُطَهِّرُهُمْ وَتُزَكِّيهِمْ بِهَا وَصَلِّ عَلَيْهِمْ ۚ إِنَّ صَلَاتَكَ سَكَنٌ ۚ لَهُمْ ۚ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ

(ऐ रसूल) तुम उनके माल की ज़कात लो (और) इसकी बदौलत उनको (गुनाहों से) पाक साफ़ करो और उनके वास्ते दुआएं ख़ैर करो क्योंकि तुम्हारी दुआ इन लोगों के हक़ में इत्मेनान (का वाइस है) और खुदा तो (सब कुछ) सुनता (और) जानता है

أَلَمْ يَعْلَمُوا ۚ أَنَّ اللَّهَ هُوَ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهِ ۚ وَيَأْخُذُ الصَّدَقَاتِ وَأَنَّ اللَّهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ

क्या इन लोगों ने इतने भी नहीं जाना यक़ीनन खुदा बन्दों की तौबा कुबूल करता है और वही ख़ैरातें (भी) लेता है और इसमें शक़ नहीं कि वही तौबा का बड़ा कुबूल करने वाला मेहरबान है

وَقُلِ اعْمَلُوا ۚ فَسِيرَیَ اللَّهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُولُهُ ۚ وَالْمُؤْمِنُونَ ۚ وَسُتُرْدُونَ إِلَىٰ عِلْمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ

और (ऐ रसूल) तुम कह दो कि तुम लोग अपने अपने काम किए जाओ अभी तो खुदा और उसका रसूल और मोमिनीन तुम्हारे कामों को देखेंगे और बहुत जल्द (क़यामत में) ज़ाहिर व बातिन के जानने वाले (खुदा) की तरफ़ लौटाए जाएंगे तब वह जो कुछ भी तुम करते थे तुम्हें बता देगा

وَأَخْرُونَ مُرْجُونَ لَأَمْرِ اللَّهِ إِمَّا يُعَذِّبُهُمْ وَإِمَّا يَتُوبُ عَلَيْهِمْ ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ

और कुछ लोग हैं जो हुक्मे खुदा के उम्मीदवार किए गए हैं (उसको अख़्तियार है) ख़्वाह उन पर अज़ाब करे या उन पर मेहरबानी करे और खुदा (तो) बड़ा वाकिफ़कार हिकमत वाला है

وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا ۚ مَسْجِدًا ۚ ضِرَارًا ۚ وَكُفْرًا ۚ وَتَفْرِيقًا ۚ بَيْنَ الْمُؤْمِنِينَ وَإِرْصَادًا ۚ لِمَنْ حَارَبَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۚ مِنْ قَبْلُ ۚ وَلِيَحْلِفُنَّ إِنْ أَرَدْنَا إِلَّا الْحُسْنَىٰ ۚ وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ

और (वह लोग भी मुनाफिक हैं) जिन्होंने (मुसलमानों के) नुकसान पहुंचाने और कुफ्र करने वाले और मोमिनीन के दरमियान तफरका (फूट) डालते और उस शख्स की घात में बैठने के वास्ते मस्जिद बनाकर खड़ी की है जो खुदा और उसके रसूल से पहले लड़ चुका है (और लुत्फ तो ये है कि) जरूर कसमें खाएंगे कि हमने भलाई के सिवा कुछ और इरादा ही नहीं किया और खुदा खुद गवाही देता है

لَا تَقُمْ فِيهِ أَبَدًا ۚ لِمَسْجِدٍ أُسِّسَ عَلَى التَّقْوَىٰ مِنْ أَوَّلِ يَوْمٍ أَحَقُّ أَنْ تَقُومَ فِيهِ ۚ فِيهِ رِجَالٌ يُحِبُّونَ أَنْ يَتَطَهَّرُوا ۚ وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُطَهَّرِينَ

ये लोग यकीनन झूठे हैं (ऐ रसूल) तुम इस (मस्जिद) में कभी खड़े भी न होना वह मस्जिद जिसकी बुनियाद अव्वल रोज़ से परहेज़गारी पर रखी गई है वह जरूर उसकी ज्यादा हकदार है कि तुम उसमें खड़े होकर (नमाज़ पढ़ो क्योंकि) उसमें वह लोग हैं जो पाक व पाकीज़ा रहने को पसन्द करते हैं और खुदा भी पाक व पाकीज़ा रहने वालों को दोस्त रखता है

أَفَمَنْ أُسِّسَ بُنْيَانُهُ ۚ عَلَى تَقْوَىٰ مِنَ اللَّهِ وَرِضْوَانٍ خَيْرٌ أَمْ مَنْ أُسِّسَ بُنْيَانُهُ ۚ عَلَى شَفَا جُرْفٍ هَارٍ ۚ فَأَنْهَارٌ بِهِ ۚ فِي نَارٍ جَهَنَّمَ ۚ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ

क्या जिस शख्स ने खुदा के खौफ और खुशनूदी पर अपनी इमारत की बुनियाद डाली हो वह ज्यादा अच्छा है या वह शख्स जिसने अपनी इमारत की बुनियाद इस बोदे किनारे के लब पर रखी हो जिसमें दरार पड़ चुकी हो और अगर वह चाहता हो फिर उसे ले दे के जहन्नुम की आग में फट पड़े और खुदा ज़ालिम लोगों को मंज़िलें मकसूद तक नहीं पहुंचाया करता

لَا يَزَالُ بُنْيَانُهُمُ الَّذِي بَنَوْا ۚ رِيبَةً ۚ فِي قُلُوبِهِمْ إِلَّا أَنْ تَقَطَّعَ قُلُوبُهُمْ ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ

(ये इमारत की) बुनियाद जो उन लोगों ने क़ायम की उसके सबब से उनके दिलों में हमेशा धरपकड़ रहेगी यहाँ तक कि उनके दिलों के परखचे उड़ जाएँ और खुदा तो बड़ा वाकिफ़कार हकीम है

﴿۱﴾ إِنَّ اللَّهَ اشْتَرَىٰ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ أَنْفُسَهُمْ وَأَمْوَالَهُمْ بِأَنْ لَهُمُ الْجَنَّةَ ﴿۲﴾ يُقْتُلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَيَقْتُلُونَ وَيُقْتَلُونَ ﴿۳﴾ وَعَدًا عَلَيْهِ حَقًّا ﴿۴﴾ فِي التَّوْرَةِ وَالْإِنْجِيلِ وَالْقُرْآنِ ﴿۵﴾ وَمَنْ أَوْفَىٰ بِعَهْدِهِ ﴿۶﴾ مِنَ اللَّهِ ﴿۷﴾ فَاسْتَبْشِرُوا ﴿۸﴾ بَبَيْعِكُمُ الَّذِي بَايَعْتُمْ بِهِ ﴿۹﴾ وَذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ

इसमें तो शक ही नहीं कि खुदा ने मोमिनीन से उनकी जानें और उनके माल इस बात पर खरीद लिए हैं कि (उनकी कीमत) उनके लिए बेहिशत है (इसी वजह से) ये लोग खुदा की राह में लड़ते हैं तो (कुफ़ार को) मारते हैं और खुद (भी) मारे जाते हैं (ये) पक्का वायदा है (जिसका पूरा करना) खुदा पर लाज़िम है और ऐसा पक्का है कि तौरैत और इन्जील और कुरान (सब) में (लिखा हुआ है) और अपने एहद का पूरा करने वाला खुदा से बढ़कर कौन है तुम तो अपनी खरीद फरोख्त से जो तुमने खुदा से की है खुशियाँ मनाओ यही तो बड़ी कामयाबी है

الَّذِينَ الْعَبْدُونَ الْحَمِيدُونَ السَّاجِدُونَ الْرُكَّعُونَ السَّحُّونَ الْحَمْدُونَ السُّحُونَ الْكَافُونَ السَّجِدُونَ أَلْءَامِرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَالنَّاهُونَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَالْحَفِظُونَ لِحُدُودِ اللَّهِ ﴿۱﴾ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ

(ये लोग) तौबा करने वाले इबादत गुज़ार (खुदा की) हम्दो सना (तारीफ़) करने वाले (उस की राह में) सफर करने वाले रूकूद करने वाले सजदा करने वाले नेक काम का हुक्म करने वाले और बुरे काम से रोकने वाले और खुदा की (मुकरर की हुई) हदो को निगाह रखने वाले हैं और (ऐ रसूल) उन मोमिनीन को (बेहिशत की) खुशखबरी दे दो

مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ وَالَّذِينَ ءَامَنُوا ﴿۱﴾ أَنْ يَسْتَغْفِرُوا ﴿۲﴾ لِلْمُشْرِكِينَ وَلَوْ كَانُوا ﴿۳﴾ أُولَىٰ قُرْبَىٰ مِنْ ﴿۴﴾ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُمْ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ

नबी और मोमिनीन पर जब ज़ाहिर हो चुका कि मुशरेकीन जहन्नुमी है तो उसके बाद मुनासिब नहीं कि उनके लिए मग़फिरत की दुआएं माँगें अगरचे वह मुशरेकीन उनके क़राबतदार हो (क्यों न) हो

وَمَا كَانَ أَسْتَغْفَارُ إِبْرَاهِيمَ لِأَبِيهِ إِلَّا عَنْ مَّوْعِدَةٍ ﴿۱﴾ وَعَدَهَا إِيَّاهُ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُ ﴿۲﴾ أَنَّهُ ﴿۳﴾ عَدُوٌّ ﴿۴﴾ لِلَّهِ تَبَرَّأَ مِنْهُ ﴿۵﴾ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ لَأَوَّهٌ حَلِيمٌ

और इबराहीम का अपने बाप के लिए मग़फिरत की दुआ माँगना सिर्फ इस वायदे की वजह से था जो उन्होंने अपने बाप से कर लिया था फिर जब उनको मालूम हो गया कि वह यक्कीनी खुदा का दुश्मन है तो उससे बेज़ार हो गए, बेशक इबराहीम यक्कीनन बड़े दर्दमन्द बुर्दबार (सहन करने वाले) थे

وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُضِلَّ قَوْمًا ۖ اَبَعْدَ اِذْ هَدٰهُمْ حَتّٰى يُبَيِّنَ لَهُمْ مَّا يَتَّقُوْنَ ۚ اِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ

खुदा की ये शान नहीं कि किसी क्रौम को जब उनकी हिदायत कर चुका हो उसके बाद बेशक खुदा उन्हें गुमराह कर दे हत्ता (यहां तक) कि वह उन्हीं चीज़ों को बता दे जिससे वह परहेज़ करें बेशक खुदा हर चीज़ से (वाक्फि है)

اِنَّ اللَّهَ لَهُ ۚ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ يُحْيِ ۚ وَيُمِيْتُ ۚ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللَّهِ مِّنْ وَلِيٍّ ۚ وَلَا نَصِيْرٌ ۚ

इसमें तो शक़ ही नहीं कि सारे आसमान व ज़मीन की हुकूमत खुदा ही के लिए खास है वही (जिसे चाहे) जिलाता है और (जिसे चाहे) मारता है और तुम लोगों का खुदा के सिवा न कोई सरपरस्त है न मददगार

لَقَدْ تَابَ اللَّهُ عَلَى النَّبِيِّ وَالْمُهَاجِرِينَ وَالْأَنْصَارِ الَّذِينَ اتَّبَعُوهُ فِي سَاعَةِ الْعُسْرَةِ مِّنْ ۚ بَعْدَ مَا كَادَ يَزِيْغُ قُلُوْبُ فَرِيقٍ ۚ مِّنْهُمْ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ ۚ اِنَّهٗ ۚ بِهِمْ رَعُوْفٌ ۚ رَّحِيْمٌ ۚ

अलबत्ता खुदा ने नबी और उन मुहाजिरीन अन्सार पर बड़ा फज़ल किया जिन्होंने तंगदस्ती के वक्त रसूल का साथ दिया और वह भी उसके बाद कि करीब था कि उनमें से कुछ लोगों के दिल जगमगा जाएँ फिर खुदा ने उन पर (भी) फज़ल किया इसमें शक़ नहीं कि वह उन लोगों पर पड़ा तरस खाने वाला मेहरबान है

وَعَلَى الثَّلَاثَةِ الَّذِينَ خُلِفُوْا ۚ حَتّٰى اِذَا ضَاقَتْ عَلَيْهِمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ وَضَاقَتْ عَلَيْهِمْ اَنْفُسُهُمْ وَظَنُّوْا ۚ اَنْ لَا مَلْجَآ مِنْ اِلٰهِ اِلَّيْهِ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ لِيَتُوبُوْا ۚ اِنَّ اللَّهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ

और उन यमीमों पर (भी फज़ल किया) जो (जिहाद से पीछे रह गए थे और उन पर सख्ती की गई) यहाँ तक कि ज़मीन बावजूद उस वसअत (फैलाव) के उन पर तंग हो गई और उनकी जानें (तक) उन पर तंग हो गई और उन लोगों ने समझ लिया कि खुदा के सिवा और कहीं पनाह की जगह नहीं फिर खुदा ने उनको तौबा की तौफीक दी ताकि वह (खुदा की तरफ) रूजू करें बेशक खुदा ही बड़ा तौबा कुबूल करने वाला मेहरबान है

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ اتَّقُوا ۚ اللَّهَ وَكُونُوا ۚ مَعَ الصَّٰدِقِينَ

ऐ ईमानदारों खुदा से डरो और सच्चों के साथ हो जाओ

مَا كَانَ لِأَهْلِ الْمَدِينَةِ وَمَنْ حَوْلَهُمْ مِنَ الْأَعْرَابِ أَنْ يَتَخَلَّفُوا ۚ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ وَلَا يَرْغَبُوا ۚ بِأَنفُسِهِمْ عَنْ نَفْسِهِ ۚ ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ لَا يُصِيبُهُمْ ظَمَأٌ ۚ وَلَا نَصَبٌ ۚ وَلَا مَخْمَصَةٌ ۚ ۚ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا يَطُونَ مَوْطِئًا ۚ لَا يَغِيظُ الْكُفَّارَ وَلَا يَنَالُونَ مِنْ عَدُوٍّ ۚ نِيْلًا ۚ إِلَّا كُتِبَ لَهُمْ بِهِ ۚ عَمَلٌ ۚ صَالِحٌ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ

मदीने के रहने वालों और उनके गिर्दोनों (आस पास) देहातियों को ये जायज़ न था कि रसूल खुदा का साथ छोड़ दें और न ये (जायज़ था) कि रसूल की जान से बेपरवा होकर अपनी जानों के बचाने की फ्रिक करें ये हुक्म उसी सबब से था कि उन (जिहाद करने वालों) को खुदा की रूह में जो तकलीफ़ प्यास की या मेहनत या भूख की शिद्दत की पहुँचती है या ऐसी राह चलते हैं जो कुफ़्फ़ार के ग़ैज़ (ग़ज़ब का बाइस हो या किसी दुश्मन से कुछ ये लोग हासिल करते हैं तो बस उसके ऐवज़ में (उनके नामए अमल में) एक नेक काम लिख दिया जाएगा बेशक खुदा नेकी करने वालों का अज़्र (व सवाब) बरबाद नहीं करता है

وَلَا يُنْفِقُونَ نَفَقَةً ۚ صَغِيرَةً ۚ وَلَا كَبِيرَةً ۚ وَلَا يَقْطَعُونَ وَادِيًا ۚ إِلَّا كُتِبَ لَهُمْ لِيَجْزِيَهُمُ اللَّهُ أَحْسَنَ مَا كَانُوا ۚ يَعْمَلُونَ

और ये लोग (खुदा की राह में) थोड़ा या बहुत माल नहीं खर्च करते और किसी मैदान को नहीं क़तआ करते मगर फौरन (उनके नामाए अमल में) उनके नाम लिख दिया जाता है ताकि खुदा उनकी कारगुज़ारियों का उन्हें अच्छे से अच्छा बदला अता फरमाए

ۚ وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُونَ لِيَنفِرُوا ۚ كَآفَّةً ۚ ۚ فَلَوْلَا نَفَرَ مِنْ كُلِّ فِرْقَةٍ ۚ مِنْهُمْ طَائِفَةٌ ۚ لِيَتَفَقَّهُوا ۚ فِي الدِّينِ وَلِيُنذِرُوا ۚ قَوْمَهُمْ إِذَا رَجَعُوا ۚ إِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ يَحْذَرُونَ

और ये भी मुनासिब नहीं कि मोमिननि कुल के कुल (अपने घरों में) निकल खड़े हों उनमें से हर गिरोह की एक जमाअत (अपने घरों से) क्यों नहीं निकलती ताकि इल्मे दीन हासिल करे और जब अपनी क़ौम की तरफ पलट के आवे तो उनको (अज़्र व आखिरत से) डराए ताकि ये लोग डरें

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ قَتِلُوا ۚ الَّذِينَ يُلُونَكُمْ مِّنَ الْكُفَّارِ وَلِيَجِدُوا ۚ فِيكُمْ غِلْظَةً ۚ ۚ
وَأَعْلَمُوا ۚ أَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ

ऐ ईमानदारों कुफ़ार में से जो लोग तुम्हारे आस पास के हैं उन से लड़ों और (इस तरह लड़ना) चाहिए कि वह लोग तुम में करारापन महसूस करें और जान रखो कि बेशुबहा खुदा परहेज़गारों के साथ है

وَإِذَا مَا أُنزِلَتْ سُورَةٌ ۚ فَمِنْهُمْ مَّن يَقُولُ أَيُّكُمْ زَادَتْهُ هَذِهِ ۚ إِيْمَنًا ۚ ۚ فَأَمَّا الَّذِينَ
ءَامَنُوا ۚ فَزَادَتْهُمْ إِيْمَنًا ۚ ۚ وَهُمْ يَسْتَبْشِرُونَ

और जब कोई सूरा नाज़िल किया गया तो उन मुनाफ़िक़ीन में से (एक दूसरे से) पूछता है कि भला इस सूरे ने तुममें से किसी का ईमान बढ़ा दिया तो जो लोग ईमान ला चुके हैं उनका तो इस सूरे ने ईमान बढ़ा दिया और वह वहां उसकी खुशियाँ मनाते हैं

وَأَمَّا الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ ۚ فَزَادَتْهُمْ رِجْسًا إِلَىٰ رِجْسِهِمْ وَمَاتُوا ۚ ۚ وَهُمْ كُفْرُونَ

मगर जिन लोगों के दिल में (निफ़ाक़ की) बीमारी है तो उन (पिछली) ख़बासत पर इस सूरे ने एक ख़बासत और बढ़ा दी और ये लोग कुफ़र ही की हालत में मर गए

أَوَلَا يَرَوْنَ أَنَّهُمْ يُفْتَنُونَ فِي كُلِّ عَامٍ ۚ مَّرَّةً أَوْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ لَا يَتُوبُونَ وَلَا هُمْ يَذْكُرُونَ

क्या वह लोग (इतना भी) नहीं देखते कि हर साल एक मरतबा या दो मरतबा बला में मुबितला किए जाते हैं फिर भी न तो ये लोग तौबा ही करते हैं और न नसीहत ही मानते हैं

وَإِذَا مَا أُنزِلَتْ سُورَةٌ ۚ نَّظَرَ بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ هَلْ يَرِيكُمْ مِّنْ أَحَدٍ ۚ ثُمَّ
أَنْصَرَفُوا ۚ ۚ صَرَفَ اللَّهُ قُلُوبَهُمْ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ ۚ لَا يَفْقَهُونَ

और जब कोई सूरा नाज़िल किया गया तो उसमें से एक की तरफ़ एक देखने लगा (और ये कहकर कि) तुम को कोई मुसलमान देखता तो नहीं है फिर (अपने घर) पलट जाते हैं (ये लोग क्या पलटेंगे गोया) खुदा ने उनके दिलों को पलट दिया है इस सबब से कि ये बिल्कुल नासमझ लोग हैं

لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ ۚ مِّنْ أَنْفُسِكُمْ عَزِيزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِينَ رَءُوفٌ ۚ رَّحِيمٌ ۚ

लोगों तुम ही में से (हमारा) एक रसूल तुम्हारे पास आ चुका (जिसकी शफ़क्कत (मेहरबानी) की ये हालत है कि) उस पर शाक़ (दुख) है कि तुम तकलीफ़ उठाओ और उसे तुम्हारी बेहूदी का हौका है ईमानदारों पर हद दर्जे रफ़ीक़ मेहरबान हैं

فَإِنْ تَوَلَّوْا ۚ فَقُلْ حَسْبِيَ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ۚ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ

ऐ रसूल अगर इस पर भी ये लोग (तुम्हारे हुक्म से) मुँह फेरें तो तुम कह दो कि मेरे लिए खुदा काफी है उसके सिवा कोई माबूद नहीं मैंने उस पर भरोसा रखा है वही अर्श (ऐसे) बुर्जूग (मखलूक का) मालिक है